नगरीय समाजशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषायें

UG SEMESTER –III, Core Course 06- Urban Sociology

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

नगरीय समाजशास्त्र का अर्थ

प्रत्येक मानव समूह जिस समुदाय तथा जिस समाज में रहता है। उसका उसके व्यक्तित्व व्यवहार तथा जीवन स्तर पर विशेष प्रभाव पड़ता है। चूंकि मानव समाज का एक अभिन्न अंग माना जाता है। अतः उसके विभिन्न सामाजिक समूहों का उस पर विशेष प्रभाव पड़ता है। विभिन्न सामाजिक समूहों के अन्तर्गत ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्र तथा नगरीय तथा ग्रामीण पर्यावरण व संस्कृति का विशेष स्थान होता है। जिसका मानव के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक जीवन पर भी एक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

नगरीय समाजशास्त्र वर्तमान समय में समाज शास्त्र की एक महत्वपूर्ण उपशाखा है। जिसके अन्तर्गत नगरीय जीवन, जीवन स्तर, विभिन्न सामाजिक घटनायें, सामाजिक समस्याओं तथा नगरीय सामाजिक क्रियाओं, सामाजिक सम्बन्धों, सामाजिक संरचनाओं का सम्पूर्ण वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। नगरीय समाजशास्त्र को दो शब्दों 'नगरीय' तथा 'समाजशास्त्र' से समझ सकते हैं। 'नगरीय' शब्द का अर्थ नगरीय समुदाय जिसमें व्यक्ति, परिवार व सामाजिक सम्बंधों जो ग्रामीण समुदाय से विपरीत जीवन पद्धति वाला हो। समाजशास्त्र से तात्पर्य समाज विभिन्न सामाजिक संस्थायें तथा मानवीय सामाजिक सम्बनधों के अध्ययन से होता है। इस प्रकार नगरीय समाजशास्त्र से तात्पर्य नगरीय समाज में जीवन–यापन करने वाले लोगों के सामाजिक सम्बन्ध एवं उनके जीवन से सम्बन्धित अध्ययन से सम्बंधित है।

नगरीय समाजशास्त्र की परिभाषाएँ

1— एण्डरसन के अनुसार — ''नगरीय समाजशास्त्र कस्बों एवं नगरों में समाज और जीवन के ढंग से संबंधित है।

2— एल0 डब्ल्यू0 ब्राइस एवं बैंजामिन खान के अनुसार — ''नगरों का अध्ययन व उससे सम्बन्धित तमाम समस्याओं का अध्ययन समाजशास्त्र की एक नवीन एवं महत्वपूर्ण शाखा नगरीय समाजशास्त्र में किया जाता है। ये नगरीय समस्याएँ मानवीय समस्याएँ हैं और इनका हल मनुष्य के द्वारा मानवीय ढंग से ही होना चाहिए।'

3—बर्गल के कथनानुसार, ''नगरीय सामाजिक क्रियाओं, सामाजिक सम्बंधों, सामाजिक संस्थाओं पर नगरीय जीवन के प्रभाव एवं नगरीय जीवन के ढंग पर आधारित और इससे विकसित सभ्यताओं के प्रकारों से सम्बंधित है।'

4—इरिवसन —''एक सामाजिक वैज्ञानिक के रूप में नगरीय समाजशास्त्री उस सम्पूर्ण जटिल परिस्थिति एवं उन सभी अर्न्तसम्बंधों में रूचि रखता है, जो कि नगरीय सामाजिक जीवन का निर्माण करते हैं। यह नगरीय समग्र के किसी एक अंग में नहीं, अपितु सम्पूर्ण नगरीय समग्र का अध्ययन करता है।''

5— हॉब हाउस—''नगरीय समाजशास्त्र नगर के जीवन और समस्याओं का विशिष्ट अध्ययन है।'

6— लुइस वर्थ के अनुसार— ''नगरवाद एक विशेष प्रकार की जीवन पद्धति को कहते हैं।''

7– लॉरी नेल्सन के अनुसार– "नगरीय समाजशास्त्र, नगरीय पर्यावरण में मनुष्यों और नगरीय समूहों के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन है।'

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है कि अनेक समाजशास्त्रियों एवं विद्वानों ने नगरीय समाजशास्त्र को नगरीय जीवन एवं इससे सम्बन्धित विभिन्न सामाजिक समूहों के अध्ययन विषय के रूप में परिभाषित करने का प्रयास किया है।

वास्तव में नगरीय समाजशास्त्र मुख्य रूप से नगरीय समाज की अनेकों सामाजिक क्रियाओं, व्यक्तियों के मध्य सामाजिक सम्बन्धों, विभिन्न सामाजिक संस्थाओं नगरीय सामाजिक संरचनाओं एवं संस्कृति पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों के अध्ययन विषय से सम्बन्धित एक विषय है।